तेरी मेहरबानी है हमपे इतनी,
अकेली जुबां से मैं कह न पाऊँ
मेरा रोम रोम जुबां बन के गाए,
सिफत तेरी धनी जी मैं कह न पाऊँ

1- मेरे एक तन पर कोटन धड़ लगे हों,
कोटन मुख में कोटन जुबां बोलती हों
तेरे एक एहसान के बदले में धनी,
मैं अपने को सरभर न पाऊँ
2- मुझे माया के जाल से है निकाला,
त्रैगुण के फंद से है छुड़ाया
तेरे चरणों से है निसवत मेरी,
मैं घड़ी घड़ी पल पल गुण तेरे ग्राऊँ
3- मेरा इस्क ईमान सदा कायम रखना,
फरेबों की दुनिया में जाऊँ भटक न
तुमहीं मेरी आत्म के प्राण प्रीतम,
मैं अंगना हूं तेरी तेरा इश्क पाऊँ

Nijanand App